# दोहे

**जय चक्रवर्ती,** राजभाषा अधिकारी
आई.टी.आई.लि., रायबरेली-10

मीरा, केशव, जायसी, तुलसी, सूर, कबीर।
किस भाषा की है भला, हिन्दी-सी तकदीर।।

पृष्ठ-पृष्ठ स्वर्णिम रहा, हो जिसका इतिहास।
वह हिन्दी क्यों कर भला, दिखती आज उदास।।

अपने ही घर में हुई, हिन्दी आज अछूत।
दुःख का होगा और क्या, इससे बड़ा सबूत।।

सम्मेलन, संगोष्ठियाँ, पुरस्कार, पदनाम।
हिन्दी के हिस्से यही, धोखे-दर्द तमाम।।

अंकित जिनकी रोटियों पर हिन्दी का नाम।
हिन्दी उनके वास्ते, शब्द एक बे-दाम।।

निज भाषा, निज राष्ट्र, निज संस्कृति से परहेज।
गोरों से आगे हुए, हम काले-अंग्रेज।।

अंग्रेजी के मोह में, खोयी निज पहचान।
घर के रहे, न घाट के, हम "धोबी के श्वान"।

कथा, कहानी, लोरियाँ, थपकी, लाड़-दुलार।
अपनी भाषा के सिवा, और कहाँ ये प्यार।।

बचा रहे इस देह में, स्वाभिमान का अंश।
रखो बचाकर इसलिए, निजभाषा का वंश।।

मॉ को माँ कहना जिन्हें, लगता है अपमान।
विनती है, सद्‌बुद्धि दो, उनको हे भगवान।।

****